Changing Ways
बदलती राहें
(साप्ताहिक)

वर्ष 01, अंक 04, पृष्ठ : 04 मूल्य - 4 रूपये धर्मशाला, 01 फरवरी 2016 हर सोमवार को प्रकाशित

रेत-बजरी तक नहीं खरीद पाएंगे पंचायत प्रधान, टेंडर होगा

मंडी। पंचायतीराज संस्थाओं में पारदर्शिता लाने के लिए पंचायत प्रधानों को ठेकेदारी प्रथा से मुक्त किया जा रहा है। अब पंचायत प्रधान विकास कार्यों के लिए रेत-बजरी अपने स्तर पर नहीं खरीद पाएंगे। इसके लिए एसडीएम की अध्यक्षता में एक साथ चार-पांच पंचायतों के टैंडर किए जाएंगे। इसकी अदायगी भी ऑन लाईन होगी।

ग्रामीण विकास एवं पंचातीराज मंत्री अनिल शर्मा ने शनिवार को सर्किट हाउस मंडी में पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि पंचायत प्रधानों को पंचायतों के विकास कार्यों में उलझाने के बजाय यह जिम्मा विभागीय अधिकारियों का होगा। इसके लिए वे जवाबदेय भी होंगे। ऐसे आए दिन घपले घोटालों में पंचायत प्रधान फंसते रहते थे, इससे उन्हें निजात मिलेगी। वे स्वतंत्र रूप से अपनी पंचायत के लिए योजनाएं बना सकेंगे।

उन्होंने बताया कि पंचायतों में विकास कार्यों के लिए सेवानिवृत लोगों की कमेटियों का गठन कर उनके अनुभव का फायदा लिया जाएगा।

अनिल शर्मा ने कहा कि पंचायत प्रधानों को प्रशिक्षित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि पूर्व में पंचायत प्रधान एग्रीमेंट तो कर लेते थे, मगर उस कार्य को पूरा नहीं कर पाते थे।

- पंचायती राज मंत्री अनिल शर्मा ने किया नई नीति का खुलासा
- बोले अब एसडीएम की अध्यक्षता में बनेगी कमेटी
- पंचायत के निर्णय लेंगी सेवानिवृत्त लोगों की कमेटियां
- पंचायत प्रधान अब वित्तीय गड़बडियों से दूर रहकर बनाएंगे योजना

इसके लिए अलग से और बजट की मांग करते रहते थे, मगर अब किसी भी कार्य का पहले एस्टिमेट बनेगा। इसके बाद ही टैंडर किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि पंचायतें आत्म स्वावलंबी बनें इसके लिए पंचायत के ही लोगों का सलाहकार बोर्ड बनेगा। उनके सुझाव पर ही पंचायतों की आर्थिक स्थिति सुधारने का प्रयास किया जाएगा।

मनरेगा का 50 करोड़ केंद्र पर बकाया

ग्रामीण विकास मंत्री ने कहा कि मनरेगा के 50 करोड़ रूपए केंद्र से बकाया हैं।

इसमें साढ़े नौ करोड़ अकेले मंडी जिला का हिस्सा है। इस कारण मनरेगा की देनदारियां अटकी हुई हैं। उन्होंने कहा कि 14वें वित्तायोग का 1800 करोड़ रूपया हिमाचल प्रदेश को मिलेगा। यह राशि जिला परिषद के बजाय सीधे पंचायतों को आवंटित की जाएगी।

धर्मशाला: स्मार्ट सिटी के लिए करना होगा इंतजार

धर्मशाला। मोदी सरकार ने अपनी बहुप्रतीक्षित स्मार्ट सिटी योजना के तहत प्रथम चरण के लिए 20 शहरों को स्मार्ट शहर बनाने की घोषणा कर दी है। इस योजना के प्रथम चरण की प्रतियोगिता में 49वें पायदान पर रहा धर्मशाला शहर दौड़ से बाहर हो गया। हिमाचल प्रदेश से सिर्फ एक ही शहर को इस दौड़ में जगह मिली थी। इसके लिए शिमला व धर्मशाला के बीच प्रतिस्पर्धा की गई तो धर्मशाला इसमें आगे निकल गया। इसके बाद देश के सौ शहरों में से धर्मशाला शहर का नाम भी टाप 20 की दौड़ में शामिल किया गया। यह दौड़ देश भर के बाकी बड़े-बड़े शहरों के बीच थी। इस प्रतिस्पर्धा में शामिल होने से पूर्व ही धर्मशाला शहर को लेकर अपने ही प्रदेश में विवाद खड़ा कर दिया गया। शिमला को इस दौड़ में शामिल न किए जाने को लेकर राजनीतिक कलेश कोर्ट तक पहुंचा तो कोर्ट ने इसके चयन को रद्द करके दोबारा से चयन करने के आदेश दे दिए। दोबारा से चयन की प्रक्रिया अपनाई गई तो भी धर्मशाला ही शिमला से आगे रहा। इस बीच देश में चल रही दौड़ में धर्मशाला शहर अंदरूनी गुटबाजी के चलते टिक नहीं पाया और पहले बीस शहरों में इस शहर को जगह नहीं मिली।

हिमाचल प्रदेश जैसे छोटे से राज्य के शहर का पहले चरण की दौड़ से बाहर होना कोई बड़ी बात नहीं है, क्योंकि उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, हरियाणा, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे बड़े-बड़े राज्यों के शहर भी टाप-20 में जगह नहीं बना सके हैं। प्रथम दौड़ के बाद अब आगे के रास्ते खुले हुए हैं। अगली बार भी ऐसी ही प्रतिस्पर्धा होगी। लिहाजा धर्मशाला शहर को अगली बार स्मार्ट सिटी योजना में शामिल किए जाने से पहले शिमला और धर्मशाला की जो खाई पैदा की जा रही है, उससे उभरने की जरूरत है।

क्या आप नशे की लत से परेशान हैं?
सम्पर्क करें
राष्ट्रीय टोल फ्री हैल्प लाईन
1800-11-0031
(प्रातः 9:30 बजे से सायं 6:00 बजे तक, सोमवार से शनिवार)
सत्यमेव जयते
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय
भारत सरकार
Gunjan
NISD
स्थानीय परामर्श के लिए संपर्क करें
क्षेत्रीय संसाधन एवं प्रशिक्षण केंद्र उत्तर - II
गुंजन सामुदायिक विकास का संगठन
तपोवन रोड, सिद्धबाड़ी, तहसील धर्मशाला, जिला कांगड़ा (हि0 प्र0) - 176057
टेलीफोन : 91-1892-235315, 208255, 9459082624
ईमेल : rrtcnorth.hp@gmail.com, gocd.hp@gmail.com
वेबसाइट : www.gunjanindia.org

जिला परिषद कांगड़ा में कांग्रेस को भितरघात, भाजपा को अध्यक्ष मिला

धर्मशाला। जिला परिषद कांगड़ा की हॉट सीट पर चौथी बार भाजपा का कब्जा हो गया है। भाजपा के बहुमत में पिछड़ने के बावजूद कांग्रेस में हुए भितरघात के कीचड़ से इस बार भी कमल खिल गया।

जिला परिषद के अध्यक्ष पद पर भाजपा जबकि उपाध्यक्ष पद पर कांग्रेस ने जीत हासिल की है। सभी 55 सदस्यों की उपस्थिति के दौरान हुई वोटिंग में भाजपा समर्थित भवारना से मधु गुप्ता को जिला परिषद अध्यक्ष चुना गया। मधु गुप्ता को 29 जबकि कांग्रेस समर्थित उनकी प्रतिद्वंद्वी रितु पराशर को 26 मत हासिल हुए। वहीं, उपाध्यक्ष पद पर कांग्रेस ने बाजी मार ली। उपाध्यक्ष पद कांग्रेस समर्थित शाहपुर के मत्तला से गगन सिंह जीते है।

गगन को 28 और भाजपा समर्थित

उम्मीदवार दयाल सिंह को 27 मत हासिल हुए। अध्यक्ष पद हारना कांग्रेस के लिए कांगड़ा में बड़ा झटका माना जा रहा है। अध्यक्ष पद पर हुए क्रास वोटिंग को लेकर जहां भाजपा नेताओं ने कांग्रेस के भितरघातियों का आभार जताया है, तो वहीं मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने इस पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की है।

मुख्यमंत्री ने भितरघात करवाने वालों के साथ सख्ती से निपटने की बात कहते हुए इस बात की ओर भी इशारा किया है कि वह जानते हैं कि काली भेड़ कौन है। हालांकि उन्होंने मौके की नजाकत को देखते हुए अभी तक इस मामले में खुलासा नहीं किया है कि यह काम किसका है, मगर उन्होंने अपनी राजनीतिक सुझबुझ के चलते भितरघातियों पर दबाव बनाना शुरू दिया है।

सीएम ने नगरोटा बगवां को दिया विद्युत मंडल और अग्निशमन पोस्ट

नगरोटा बगवां। मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने आज कांगड़ा जिले के विधानसभा क्षेत्र नगरोटा बगवां के लिए अनेक सौगातों की घोषणा की। उन्होंने नगरोटा बगवां में राज्य विद्युत बोर्ड मंडल और अग्निशमन पोस्ट खोलने के साथ-साथ नौरा पुल निर्माण के लिए 50 लाख रुपये की राशि की घोषणा की। उन्होंने राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला पठियार और ढलून के लिए विज्ञान भवन, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला समलोटी और हटवास में वाणिज्य की कक्षाएं आरंभ करने तथा पलाह चकलु पाठशाला को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला में स्तरोन्नत करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री ने नगरोटा में फार्मेसी संस्थान खोलने, एक सौ सौर लाईटें तथा विधानसभा में पेयजल की समस्या वाले क्षेत्रों के लिए 15 हैंडपंप स्थापित करने की घोषणा भी की। वीरभद्र सिंह ने ये घोषणाएं नगरोटा बगवां विधानसभा के चंगर क्षेत्र की 15 ग्राम पंचायतों के लिए 15 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाली विभिन्न पेयजल आपूर्ति योजनाओं के संरक्षण की परियोजना की आधारशिला के उपरांत यहां एक जनसभा को संबोधित करते हुए कीं। इस परियोजना से 182 बस्तियां लाभान्वित होंगी तथा यह योजना वर्ष 2035 तक 30 हजार की अनुमानित जनसंख्या की पेयजल आवश्यकताओं को पूरा करेगी।

मुख्यमंत्री ने चोरनाला और जोगल खड्डों पर 6.50 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित होने वाले दो पुलों, जिससे सात गांवों की 15 हजार की आबादी लाभान्वित होंगी, सहित बांदी-मटियारी-गल्लू-करसेड़ा-मूमता सड़क को विकसित करने के लिए भूमि पूजन किया।

केंद्रीय विवि बनाम सियासी जमीन बचाने की जंग

"इस मुद्दे को क्षेत्र का सवाल बनाने वाले भाजपा और कांग्रेस पक्ष के नेता इसको उचित स्थान पर खोलने की दलील देने के बजाय इसे राजनीति का अखाड़ा बनाने पर तुले हुए हैं। अगर केंद्रीय विवि के लिए उचित शैक्षणिक माहौल की बात करें, तो धौलाधार के जितना नजदीक इसका कैंपस होगा, छात्रों को पढ़ाई का उतना ही उचित और रम्य वातावरण प्राप्त होगा। इस लिहाज से धर्मशाला के आसपास के क्षेत्र को केंद्रीय विवि के कैंपस के लिए उचित माना जा रहा है। वैसे भी केंद्रीय विवि कोई छोटा सा संस्थान नहीं है कि यह एक ही जगह में सिमट जाए। अगर इससे देहरा की जनता को लाभ मिलता है, तो इसका एक हिस्सा वहां भी बनाया जा सकता है, मगर जिस तरह से इसे राजनीति का अखाड़ा बनाया जा रहा है, उससे लगता नहीं कि जल्द इसे अपना कैंपस मिलेगा। किन्तु फिर भी मानना पड़ेगा कि शैक्षणिक संस्थान का पूर्ण कैम्पस एक ही स्थान पर होना चाहिए। इससे न केवल प्रशासनिक दक्षता को बढ़ावा मिलता है बल्कि छात्रों को भी शैक्षणिक एवं अन्य सम्बंधित गतिविधियों में प्रोतसाहन मिलता है। हाँ, राजनीतिक तुष्टिकरण के लिए बॉयो मेरी टाईम एवं अन्य विषयों को देहरा में चलाया जा सकता है।।"

जिला कांगड़ा में प्रस्तावित केंद्रीय विश्वविद्यालय के निर्माण को लेकर राजनीति ने स्थपना की घोषणा के वक्त से ही जोर पकड़ रखा है। पहले ही इसके निर्माण में काफी देर हो चुकी है। मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह और पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल के अहम की जंग के कारण अभी तक क्रेंदीय विवि के लिए भूमि का चयन तक नहीं हो पाया है। अब इस विवाद में कंद्रीय मानव संसाधन मंत्री स्मृति इरानी के कूदने के कारण इसके स्थायी कैंपस का मामला अब और लंबा लटकता दिख रहा है।

गौरतलब है कि प्रदेश में केंद्रीय विवि की घोषणा यूपीए-२ के कार्यकाल में की गई थी। इसके साथ ही इसका निर्माण जिला कांगड़ा में किए जाने की घोषणा भी कर दी गई थी। मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह इसका निर्माण धर्मशाला के आसपास ही उपयुक्त स्थान पर करवाना चाहते थे, उस समय इसके निर्माण को लेकर राजनीति की बात कोई सोच भी नहीं सकता था। वैसे भी धर्मशाला को खेल और शिक्षा के लिए वातावरण के लिहाज से उपयोगी स्थल माना जाता है। इस विवि के निर्माण को लेकर राजनीति उस समय शुरू हो गई जब केंद्रीय सत्ता में मजबूत हो चुके हमीरपुर संसदीय क्षेत्र के सांसद अनुराग ठाकुर ने इसे अपने संसदीय क्षेत्र के तहत आने वाले जिला कांगड़ा के देहरा उपमंडल में बनाने की कवायद तेज करके इसे क्षेत्रीय मुद्दा बना दिया। उनके पिता और पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल सहित उनके इशारे पर चलने वाली प्रदेश भाजपा भी इस मामले में उनके साथ हो ली। फिलहाल केंद्रीय विवि का वीसी कार्यालय धर्मशाला स्थित लेखक गृह में शुरू कर दिया गया था और इसका एक कैंपस शाहपुर में खोला गया। धर्मशाला के पास पहले जो जगह दिखाई गई, उसे केंद्रीय टीम ने रिजेक्ट कर दिया। इसके बाद धूमल सरकार ने मामला देहरा की ओर बढ़ाया तो यूपीए सरकार पर कांग्रेस का कब्जा होने के चलते प्रदेश कांग्रेस और खासकर मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने इसका विरोध किया। उनका यह विरोध वाजिव भी कहा जा सकता है, क्योंकि जिस समय उन्होंने केंद्रीय विवि का परिसर धर्मशाला के आसपास बनाने का निर्णय लिया था तो उन्होंने अपने इस फैसले से दूरदर्शिता का परिचय ही दिया था। हालांकि वे इसके लिए उपयुक्त भूमि मुहैया करवाने में विफल रहे थे। अब जबकि प्रदेश में दोबारा वीर सिंह की सरकार आए हुए तीन साल बीत चुके हैं, मगर अभी भी केंद्रीय विवि के लिए भूमि के चयन का मामला जस का तस पड़ा हुआ है। हालांकि हाल ही में उन्होंने चामुंडा के नजदीक जदरांगल में उपयुक्त जगह तलाश कर मामला आगे बढ़ाया है, तो एक बार फिर से केंद्र में शक्तिशाली हो चुकी भाजपा के नेताओं में इसमें अड़ंगा लगा दि है। भाजपा नेता केंद्रीय विवि के कैंपस को देहरा में ही बनाने पर अड़े हुए हैं। अब यह सवाल उठना लाजमी है कि भाजपा नेताओं को देहरा में ऐसा क्या खास नजर आ रहा है कि वे प्रदेश सरकार के निर्णय की खिलाफत करके केंद्र में दबाव बनाकर विवि की भूमि के चयन में अड़ंगा लगा रहे हैं।

इसका जवाब यही हो सकता है कि भाजपा के पूर्व मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल और उनके बेटे सांसद अनुराग ठाकुर को देहरा में राजनीतिक लाभ दिख रहा है। यहां प्रो. धूमल के चहेते विधायक रविंद्र सिंह रवि का राजनीतिक पुनर्वास किया गया है। इससे भी बड़ी बात यह है कि धूमल परिवार और वीरभद्र सिंह परिवार पिछले कुछ सालों से व्यक्तिगत (निजी) राजनीतिक लड़ाई लड़ रहे हैं। एक-दूसरे पर मुकद्दमे और बयानबाजी हर रोज का काम हो चुकी है। ऐसे में केंद्रीय विवि भी उनकी इसी राजनीतिक रंजिश का शिकार होता दिख रहा है।

अगर राजनीतिक लाभ-हानि की बात करें तो भाजपा पिछली बार जिला कांगड़ा को तोड़ने की सियासी चाल चलने के कारण सत्ता से हाथ धोने की सजा भुगत रही है। इसके बाद पार्टी अब केंद्रीय विवि के नाम पर क्षेत्रवाद के आरोपों में घिरती नजर आ रही है।

वहीं मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने भी इसे धर्मशाला के आसपास खोलने की ज़िद पकड़ रखी है। हालांकि उनका यह हठ अपने खांस कहे जाने वाले शहरी विकास मंत्री सुधीर शर्मा से जोड़ा जा रहा है, जो बैजनाथ से पलायन करके धर्मशाला में स्थापित होने का प्रयास कर रहे हैं। इसके बावजूद उनके संबंध में तो यह कहा ही जा सकता है कि उन्होंने केंद्रीय विवि को धर्मशाला के आसपास खोलने की घोषणा तब की थी, जब इस तरह के राजनीतिक सवाल नहीं उठ सकते थे। फिलहाल वे अपने वादे को पूरा करने के लिए अड़े हुए हैं।

इस मुद्दे को क्षेत्र का सवाल बनाने वाले भाजपा और कांग्रेस पक्ष के नेता इसको उचित स्थान पर खोलने की दलील देने के बजाय इसे राजनीति का अखाड़ा बनाने पर तुले हुए हैं। अगर केंद्रीय विवि के लिए उचित शैक्षणिक माहौल की बात करें, तो धौलाधार के जितना नजदीक इसका कैंपस होगा, छात्रों को पढ़ाई का उतना ही उचित और रम्य वातावरण प्राप्त होगा। इस लिहाज से धर्मशाला के आसपास के क्षेत्र को केंद्रीय विवि के कैंपस के लिए उचित माना जा रहा है। वैसे भी केंद्रीय विवि कोई छोटा सा संस्थान नहीं है कि यह एक ही जगह में सिमट जाए। अगर इससे देहरा की जनता को लाभ मिलता है, तो इसका एक हिस्सा वहां भी बनाया जा सकता है, मगर जिस तरह से इसे राजनीति का अखाड़ा बनाया जा रहा है, उससे लगता नहीं कि जल्द इसे अपना कैंपस मिलेगा। किन्तु फिर भी मानना पड़ेगा कि शैक्षणिक संस्थान का पूर्ण कैम्पस एक ही स्थान पर होना चाहिए। इससे न केवल प्रशासनिक दक्षता को बढ़ावा मिलता है बल्कि छात्रों को भी शैक्षणिक एवं अन्य सम्बंधित गतिविधियों में प्रोतसाहन मिलता है। हाँ, राजनीतिक तुष्टिकरण के लिए बॉयो मेरी टाईम एवं अन्य विषयों को देहरा में चलाया जा सकता है।

जहां तक केंद्रीय मानव संसाधन मंत्री स्मृति ईरानी की बात है, तो उन्होंने भी भाजपा के स्थानीय नेताओं से प्राप्त फीडबैक के आधार पर प्रदेश सरकार के मुखिया वीरभद्र सिंह के खिलाफ बयान देकर इस विवाद की आग में घी डालने का ही काम किया है। अगर सही मायने में वह केंद्रीय विवि का स्थाई कैंपस बनाने में गंभीर हैं, तो उन्हें स्थानीय स्तर पर हो रही राजनीति से दूर रहकर जदरांगल में प्रदेश सरकार द्वारा मुहैया करवाई जा रही भूमि का निरीक्षण करवा कर, सही जानकारी हासिल करनी चाहिए थी। अगर सही मायने में यह भूमि केंद्रीय विवि के निर्माण के लिए उपयुक्त नहीं होती, तो इसका नुकसान प्रदेश की कांग्रेस सरकार को ही होना था।

वैसे भी केंद्र सरकार के लिए एक समान विकास करवाने की नीति पर चलना अहम होता है, न कि स्थानीय स्तर के नेताओं के अहम की लड़ाई में कूद कर आग में घी डालना। अगर प्रदेश सरकार इसके लिए भूमि मुहैया करवाने में गंभीर है, तो फिर क्या कारण है कि एचआरडी मंत्रालय अभी तक इसके निरीक्षण के लिए अपनी टीम नहीं भेज पाया है।

वहीं इस मामले में केंद्रीय विवि के वाइस चांस्लर की भूमिका भी अहम होती है। ऐसे में इस पद पर ऐसा व्यक्ति आसीन हो, जिसने प्रदेश सरकार के अधिकारी के तौर पर अपने जीवन के कई साल दिए हैं, तो इस तरह के क्षेत्रीय विवादों को हवा दिए जाने का अवसर ही नहीं मिलना चाहिए था। लिहाजा कहीं न कहीं इस विवाद के तूल पकड़ने में उनकी भूमिका भी शक के घेरे में कही जा सकती है। यह बात भी गौरतलब है कि हिप्र. विवि के क्षेत्रीय अध्ययन केंद्र धर्मशाला के निदेशक के पद पर रहते हुए केंद्रीय विवि के वीसी डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री को वीरभद्र सरकार ने उन्हें लंबे अर्से तक नौकरी से बर्खास्त रखा था। इसके बावजूद माना जाता है कि डॉ. अग्निहोत्री हमेशा ही शांत स्वभाव व अपने पद के साथ न्याय करने वाले शिक्षाविद् रहे हैं। फिर ऐसे में उनसे तो यह उम्मीद की जा सकती कि वे भाजपा और कांग्रेस के चुनिंदा नेताओं की ज़िद का अखाड़ा बने विद्या के इस महामंदिर को राजनीति की भेंट नहीं चढ़ने देंगे।

-ए० एम० अंजान
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

क्रोध ने हमको बांधा हैं या हमने क्रोध को

एक बार एक व्यक्ति एक महात्मा के पास गया और उसने उस महात्मा से कहा कि हे! महात्मा मुझे बहुत क्रोध आता हैं। कृपया कोई उपाय बताये। तब महत्मा ने धीरे से मुस्कुरा कर हाथ आगे बढाया और अपने हाथ की मुट्ठी बांधकर कहा – हे भाई !''मेरी यह मुठ्ठी बंद हो गई हैं खुल नहीं रही हैं।'' तब उस व्यक्ति ने आश्चर्य से कहा ''हे महात्मा। आपने ही यह मुठ्ठी बाँधी हैं आप खुद ही इसे खोल सकते हैं। तब महात्मा ने मुस्कुराकर कहा ''हे भाई! जब यह मुठ्ठी मुझे बांधकर नहीं रख सकती तब क्रोध तुम्हे कैसे बाँध सकता हैं मन के जिस कोने में क्रोध को पकड़ रखा हैं उसे वहाँ से जाने दो। मन में उसे बैठाकर नहीं रखोगे तो उससे दूर करने का उपाय भी नहीं पूछना होगा।''

नैतिक मूल्य:

बुराई खुद जन्म नहीं लेती। हमारा मन ही उसे जगह देता हैं। जब हम अच्छा बुरा जानते हैं तब उन्हें अपने अन्दर पनपने से भी रोक सकते हैं। बुराई को जान कर पाल कर रखना, रखने वाले की गलती होती हैं बुराई की नहीं।

जो मनुष्य इसी जन्म में मुक्ति प्राप्त करना चाहता है, उसे एक ही जन्म में हजारों वर्ष का काम करना पड़ेगा। वह जिस युग में जन्मा है, उससे उसे बहुत आगे जाना पड़ेगा, किन्तु साधारण लोग किसी तरह रेंगते-रेंगते ही आगे बढ़ सकते हैं।

-स्वामी विवेकानन्द

शादी की खुशियां छीन लीं पति से मिले एचआईवी वायरस ने

- जीवन साथी के धोखे के चलते मरने को तैयार थी लक्ष्मी
- सीएचसी से मिले सही परामर्श ने बचा लीं दो जिंदगियां

मेरा नाम लक्ष्मी (काल्पनिक नाम) है। मेरे पति निजी क्षेत्र में कर्मचारी हैं। मेरी शादी को अभी तीन माह ही हुए हैं। इस बीच जब किसी कारणवश मेरे रक्त की जांच की गई तो मुझे पता चला कि मैं एचआईवी पाजिटिव हूं। इसके बाद जब मेरे पति का टैस्ट करवाया गया तो वह भी एचआईवी पाजिटिव पाए गए।

इस तरह शादी की मेहंदी अभी हाथों से उतरी ही नहीं थी कि लक्ष्मी का वैवाहिक जीवन इस बीमारी के कारण तहसनहस होकर रह गया। वह खुद को ठगा महसूस कर रही थी और अपने पति को भी इस हालात का गुनहगार मान रही थी। लक्ष्मी ने बताया कि उसे नहीं पता कि उसके पति एचआईवी पाजिटिव कैसे हुए, लेकिन वह अपने पति की इस गलती के कारण जरूर एचआईवी का शिकार हुई थी। वैवाहिक जीवन के शुरुआत में ही एचआईवी का बज्रपात होने के कारण सब कुछ तहसनहस हो चुका था।

लक्ष्मी बताती है कि जब उसके एचआईवी पाजिटिव होने की रिपोर्ट आई तो उसके पति ने न तो उससे पूछा और न ही इसके कारण को बारे में कोई चरचा की। वह इतनी बड़ी बात होने पर भी चुप रहे। इसके चलते वह समझ गई थी कि एचआईवी पाजिटिव होने के पीछे उसके पति की ही कोई गलती थी। इसकी सजा आज वह भी भुगतने जा रही थी।

लक्ष्मी को जब एचआईवी का शिकार होने का पता चला तो वह ऐसी स्थिति में आ गई थी कि न तो उसने डाक्टर की बात सुनी और न ही काऊंसलर की। वह अपने पति से नाराज थी और अपनी किस्मत पर रो रही थी। लक्ष्मी बताती है कि उसके जीवन में खुशियां आने से पहले ही मौत का गम आ गया था। उसे ऐसा लग रहा था कि अब वह मर जाए तो अच्छा है ,या फिर वह इस बीमारी के कारण ही मर जाएगी। इसके बाद उसने अपने पति को बहुत भला-बूरा कहा, उस पर चिल्लाई और रोती रही, मगर इससे कुछ फर्क नहीं पड़ा। जो होना था वह तो हो चुका है, बस वह यह सोचकर शांत हो गई।

अचानक आई इस मुसीबत के कारण वह ऐसे हालात में जा चुकी कि अब न तो उसे खाने की इच्छा हो रही थी और न ही सजने-संवरने की। वह घर में ही पड़ी रहती थी, कहीं बाहर जाने का मन भी नहीं करता था। इस कारण उसका मन व शरीर जवाब देने लगा था। कभी-कभी रात को भी वह उठ जाती और दिमागी तौर पर परेशानी घेर कर उसे सोने नहीं देती। इसके कारण उसने अपने पति से दो माह तक बात नहीं की। फिर एक दिन वह टांडा अस्पताल गए। वहां पर उनकी मुलाकात कम्युनिटी स्पोर्ट सेंटर की काऊंसलर रजनी से बात की।

लक्ष्मी के पति ने उसके हालात के बारे में काऊंसलर को बताया तो उसने लक्ष्मी को सेंटर में लेकर आने की सलाह दी। इस पर उसके पति ने काऊंसलर को लक्ष्मी के मोबाइल फोन पर उसकी बात करवाई। जब काऊंसलर ने उसे समझा कर सीएससी में आने को कहा, तो उसने आने से इनकार कर दिया और काऊंसलर की बात नहीं मानी। बार-बार फोन करने के कारण एक दिन वह खुद ही वहां जाने को राजी हो गई और अपने पति के साथ सीएससी में आईं। काऊंसलर ने लक्ष्मी को समझाया कि जैसा वह समझ रहीं है, वैसा कुछ नहीं हुआ है। उसे समझाया गया कि समाज में कितने लोग दिल की बीमारी से पीड़ित हैं, कई लोग बीपी के मरीज हैं, अगर वे दवाई नहीं खाएंगे तो इन बीमारियों के कारण मर जाएंगे। वैसे ही एचआईवी प्रभावित मरीजों को भी नियमित दवाई की जरूरत होती है।

लक्ष्मी को यह भी बताया गया कि पहले लोग टीबी की बीमारी के कारण इतना डर जाते थे और इसे जीवन के लिए खतरा मानते थे, मगर इस बीमारी का ईलाज होने लगा तो डर कम हुआ। इसी प्रकार एचआईवी के दुष प्रभावों को भी ईलाज से कम किया जा सकता है।

उसे समझाया गया कि जो हो चुका है, उसकी चिंता छोड़ कर भविष्य की ओर देखा जाए।

काऊंसलर ने उसे तीन-चार अन्य प्रभावित लोगों से मिलवाया। जब लक्ष्मी ने उनका दर्द जाना तो पता चला कि उनकी समस्या तो उसकी समस्या से कहीं ज्यादा है। उसे यह बात समझ आई कि कम से कम उसका पति तो उसका साथ देने को तैयार है। इस तरह सही परामर्श के कारण लक्ष्मी का उसके पति से मनमुटाव खत्म हुआ। लक्ष्मी भी पेरशानी व दबाव से बाहर आई और उसमें फिर से जीने की चाह पैदा हो गई। स्थिति सुधरी देख कर उन दोनों को पीपीटीसी कार्यक्रम से जोड़ा गया। अब लक्ष्मी नियमित परामर्श व दवा का सेवन कर रही हैं।

लक्ष्मी बताती हैं कि हालांकि वह मन में पूरी तरह खुश नहीं है, मगर उसने हालात से समझौता जरूर कर लिया है। अब उसने पाजिटिव सोच रखना शुरू कर दी है। उसने काऊंसलर रजनी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अगर उन्होंने उसे सही परामर्श नहीं दिया होता तो वह मरने की सोच रही थी और शायद मर भी गई होती।

एचआईवी/एड्स से निपटने के लिए जरूरी टूल्स टुगेदर नाऊ!

भाग-4

पीएलए का इस्तेमाल कब किया जाए ?

सामुदायिक मोबिलाइजेशन के हर चरण में पीएलए का इस्तेमाल किया जा सकता है। इससे एचआईवी/एड्स को संबोधित करने, स्थिति का विश्लेशण करने, आवश्यक कदमों के बारे में फैसला लेने, योजना बनाने, योजनाओं को लागू करने, काम पर नजर रखने, अपने प्रयासों का मूल्यांकन करने और आगे क्या कदम उठाया जाए, इस बारे में सोचने के लिए समुदायों को एकजुट करने में मदद मिलती है।

पीएलए को कहां इस्तेमाल किया जा सकता है ?

ग्रामीण और शहरी, अमीर और गरीब, सभी इलाकों में पीएलए का इस्तेमाल किया जा सकता है। उत्तर-दक्षिण, सभी जगह के देशों में इसका इस्तेमाल किया गया है। जहां लोगों को एचआईवी/एड्स के बारे में चर्चा करने में परेशानी न हो, ऐसे सभी स्थानों पर पीएलए का आराम से इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके लिए आप कार्यशाला, दफ्तर, धार्मिक बैठक और स्वास्थ्य केंद्र जैसे औपचारिक स्थानों के साथ-साथ बार, घर, पार्क आदि अनौपचारिक मेलजोल के स्थानों को भी चुन सकते हैं।

पीएलए का इस्तेमाल किस तरह किया जा सकता है ?

पीएलए को एक फेसिलिटेटर की देखरेख में प्रयोग किया जा सकता है। फेसिलिटेटर लोगों को इन टूल्स का इस्तेमाल करने में मदद देते हैं और इस बात का ख्याल रखते हैं कि सभी लोग समान रूप से हिस्सेदार करें। पीएलए फेसिलिटेटर को इस काम के लिए सही रवैया और व्यवहार अपनाना चाहिए। फेसिलिटेटर की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। आगे के अंक में इस बारे में और जानकारी दी जाएगी।

पीएलए गतिविधियों की योजना सावधानी से बनाई जानी चाहिए। आगे इस संबंध में बताया जाएगा। कि पीएलए की योजना और फेसिलिटेशन किस तरह किया जाता है।

सत्तर के दशक से पीएलए टूल लगातार विकसित हो रहे हैं। इस दरम्यान पीएलए के इस्तेमाल में बहुत सारे तरीके सामने आ चुके हैं। इस्तेमाल के इन तरीकों में इस आधार पर फर्क रहता है कि उन्हें किन लोगों के बीच, कहां और किस मकसद से इस्तेमाल किया जा रहा है। बहरहाल, पीएलए के तरीके भले ही बदलते रहते हैं, उसके बुनियादी सिद्धांत आज भी वही हैं। इन्हें सिद्धांतों के समुच्चय से एक समग्र पीएलए पद्धति बनती है।

पीएलए के सिद्धांत क्या हैं, इनके बारे में हम अगले अंक में विस्तारपूर्वक चर्चा करेंगे। इन सिद्धांतों में निम्न बातें शामिल हैं:-

-सहभागिता
-स्थानीय ज्ञान और अनुभवों को महत्व देना.
-सशक्तीकरण के प्रति समर्पण
-समूह विश्लेषण एवं सीख
-दृश्य एवं मौखिक तकनीकों का मिश्रण
-अनसुनी आवाजों की तलाश
-सही सोच और व्यवहार का महत्व

आई.ई.सी. मेटिरियल डिवेलप्मेंट - पोस्टर श्रृंखला

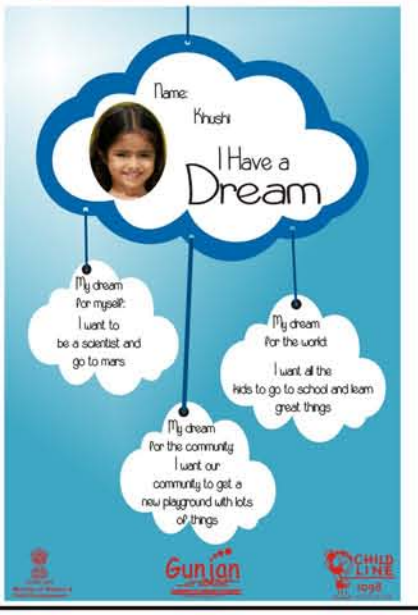

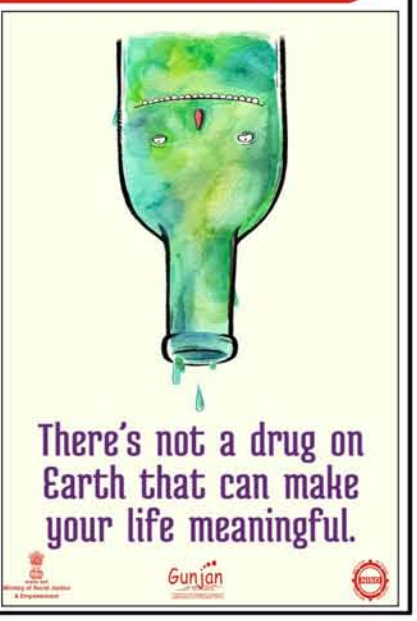

नहीं होगी सड़क दुर्घटना में मौत आ गई है डेथ प्रूफ कार

कॉन्सेप्ट पिक्करवोल्वो ने एक चौंकाने वाली प्रतिज्ञा ली है। उसने कहा है कि 2020 वह दुनिया को ऐसी डेथ प्रूफ कार देगी, जिनके उपयोग से न किसी की मौत होगी और न ही कोई गंभीर रूप से जख्मी होगा। विपत्ति मुक्त वाहन कोई अभूतपूर्व वस्तु नहीं है। वास्तव में यहां ऐसे कुछ वाहन मौजूद हैं। इंश्योरेंस इंस्टीट्यूट फॉर हाईवे सेफ्टी के आंकड़ों के मुताबिक वाहनों के नौ मॉडल ऐसे हैं, जिसमें वोल्वो एक्ससी90 भी शामिल है, जिनमें 2009 से 2012 के दौरान अमेरिका में दुर्घटना के दौरान किसी की भी मौत नहीं हुई है।

वोल्वो, अभी भी स्वीडन में स्थित है लेकिन अब उस पर मालिकाना हक चीन की झेजिआंग गेली होल्डिंग ग्रुप (जीईएलवायवाय) का है। वोल्वो दुनियाभर में अपने सभी वाहनों में ऐसे टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करना चाहती है, जिससे उसके वाहनों में न किसी की मौत हो और न कोई घायल हो। वोल्वो पहले से ही दुनियाभर में यह ट्रेक कर रही है कि उसके वाहनों में कितने लोगों की मौत हुई है और वो कैसे सुरक्ष को सुनिश्चित करे। वोल्वो इंजीनियर्स नई क्रेश-प्रीवेंशन टेक्नोलॉजी के साथ हर बार ज्यादा सुरक्षित कार का निर्माण करने में जुटे हुए हैं। 2020 तक तमाम कंपनियों ने ऑटो ड्राइव कार पेश करने की बात कही है, जिसमें वोल्वो भी शामिल है। वोल्वो का कहना है कि यह सभी नई टेक्नोलॉजी का एक साथ मिश्रण से सुरक्षा का स्तर कई गुना बढ़ जाएगा। वोल्वो के सेफ्टी इंजीनियर इरिक कूलिंग कहते हैं कि जब आप एक फुली ऑटोनोमस व्हीकल का निर्माण करते हैं तो आप एक कार के साथ होने वाली हर संभावित चीजों को सोचने की प्रक्रिया से गुजरते हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि ड्राइवर को सुरक्षित रहने के लिए अनिवार्य रूप से कार का ऑटोनोमस ड्राइविंग मोड का चुनाव करना होगा। यहां तक कि जब ड्राइवर का पूरा नियंत्रण कार पर होता है, यह सिस्टम बैकग्रांउड में काम करता रहेगा और कोई भी खतरा आने की परिस्थिति में यह कार पर कंट्रोल हासिल कर लेगा। ऑटोनोमस ड्राइविंग के लिए जरूरी अधिकांश टेक्नोलॉजी वोल्वो और अन्य ऑटो कंपनियों के पास पहले से ही मौजूद है। यहां हम कुछ ऐसे फीचर्स पर नजर डालते हैं, जिनके एक साथ आने पर एक ऐसी कार का निर्माण होगा, जो पूरी तरह से दुर्घटनामुक्त होगी।

एडेप्टिव क्रूज कंट्रोल

अधिकांश नई कारों में एडेप्टिव क्रूज कंट्रोल उपलब्ध है, इसमें सड़क पर आगे चलने वाले वाहनों की जानकारी के लिए रडार और कभी-कभी अन्य सेंसर का उपयोग किया जाता है। इसके जरिये आप अधिकतम स्पीड तय कर सकते हैं और इसके बार आपकी कार अपने आप आगे वाले वाहन से सुरक्षित दूरी बनाकर रखती है। यह अपने आप स्पीड कम करती है और आपके लिए ब्रेक भी लगाती है। इस तरह के कुछ सिस्टम केवल हाईवे पर काम करते हैं, लेकिन बहुत सी कार इस सिस्टम के साथ ट्रैफिक में भी काम करती हैं।

ऑटो लेन कीपिंग असिस्ट

कार में लगे कैमरा अपनी लेन लाइन और सड़क के छोर को पहचानते हैं और कार स्वयं अपनी लेन में चलती रहती है।

टक्कर से बचाव

रडार, कैमरा या अन्य सेंसर आगे आने वाली बाधाओं की पहचान करते हैं और ड्राइवर को चौंकन्ना रखते हैं। यदि ड्राइवर इन चेतावनी की अनदेखी करता है तो कार स्वयं किसी दुर्घटना को टालने के लिए ब्रेक लगा देगी या स्पीड को ऑटोमैटिक कम कर देगी। अमेरिका में ऑटो सेफ्टी रेगूलेटर्स ने पाया है कि यह तकनीक टक्कर कम करने में काफी प्रभावी है।

पेडेस्ट्रेन डिटेक्शन

इस कार में ऐसा कैमरा होगा, जो रात में भी साफ देख सकेगा, इसकी प्रोग्रामिंग कुछ ऐसी होती है तो कार के रास्ते में आने वाले मनुष्य की पहचान करेगा। यह ड्राइवर को पहले ही अलर्ट कर देगा और कार ऑटोमैटिकली ब्रेक लगा देगी।

लार्ज एनीमल डिटेक्शन

तेज कार से हिरण, कार या अन्य बड़े जानवर को टक्कर मारना न केवल जानवर के लिए बुरा होगा बल्कि कार यात्रियों के लिए भी बहुत बुरा होगा। वोल्वो ने एक ऐसा सिस्टम तैयार किया है जो आपकी कार के आगे अचानक आने वाले बड़े जानवर की पहले ही सूचना देगा और आपकी और नसमझ जानवर दोनों की जान बचाएगा।

55 लाख का हेयरकलर संभव नहीं: कटरीना

मुंबई। अभिनेत्री कटरीना कैफ ने उन खबरों का खंडन किया है, जिनमें कहा गया था कि अभिनेत्री कटरीना कैफ ने अभिषेक कपूर की फिल्म फितूर के लिए अपने बालों पर 55 लाख रुपये का लाल रंग करवाया है। इस पर उन्होंने कहा कि यह संभव नहीं है।

कटरीना ने बताया कि यह संभव नहीं है, यह सब सनसनी फैलाने वाली खबरें हैं जो पूरी तरह निराधार हैं। फिल्म में अपने स्टाइल और हेयर कलर के बारे में कटरीना ने कहा कि सांकेतिक कनेक्शन के साथ निर्देशक के विचार थे।

फैंटम अभिनेत्री ने कहा, यह अभिषेक का विचार था, उन्होंने कश्मीर की पृष्ठभूमि के बारे में सोचा। लाल रंग जुनून, प्यार और आग का प्रतीक है इसलिए यह सांकेतिक जुड़ाव है। अभिनेत्री ने कहा कि हमने बहुत-सी तस्वीरें लीं और बातचीत की और हमने हेयरकलर पर लॉक किया और मेरे अपने बालों पर लाल रंग करवाया और शूट के बाद दोबारा काला रंग किया। यहां तक की फिल्म के निर्देशक ने 55 लाख रुपये की कहानी को गलत करार दिया है।

सानिया, हिंगिस ने जीता एक और खिताब

नई दिल्ली। भारतीय टेनिस स्टार सानिया मिर्जा और स्विटजरलैंड की मार्टिना हिंगिस की जोड़ी ने ऑस्ट्रेलियन ओपन का खिताब अपने नाम कर लिया है. महिला डबल्स के फाइनल में इस जोड़ी ने चेक गणराज्य की सातवीं वरियता प्राप्त जोड़ी एंड्रिया लावाकोवा और लूसी हराडेका को हराकर लगातार तीसरा ग्रैंड स्लैम जीता। फाइनल मुकाबले में सानिया और हिंगिस ने प्रतिद्वंदियों को 7-6, 6-2 के सीधे सेटों में हराया। यह दोनों की लगातार 36वीं जीत है।

कहीं सोशल मीडिया ने तो नहीं चुरा रहा आपकी नींद

सोशल मीडिया साइट फेसबुक, ट्विटर पर अधिक समय बिताने वाले किशोरों को अपने उन साथियों की तुलना में नींद संबंधी समस्याएं अधिक उत्पन्न हो सकती हैं जो अक्सर बाहरी खेलकूद की गतिविधियों में भाग लेते हैं. ऐसा हाल ही में हुए एक शोध के नतीजों के आधार पर कहा जा रहा है।

इस शोध की मुख्य लेखिका और यूनिवर्सिटी ऑफ पिट्टसबर्ग की शोधकर्ता जेसिका सी लेवन्सन के अनुसार, यह उन सबूतों के पहले चरणों में है जो बताता है कि सोशल मीडिया साइट्स पर टिके रहना का चस्का आपकी नींद को प्रभावित करता है।

इस निष्कर्ष पर पहुंचने के लिए लेवन्सन और उनके साथियों ने 19 से 32 साल के 1788 लोगों पर परीक्षण किया। इस दौरान उनसे फेसबुक, यूट्यूब, ट्विटर जैसी विभिन्न सोशल साइटों से संबंधित सवाल किए गए। औसत के अनुसार, यह प्रतिभागी प्रत्येक दिन कुल 61 मिनट सोशल मीडिया पर बिताते थे। इसके अलावा वे हर सप्ताह अलग-अलग प्रकार की सोशल मीडिया साइट को भी देखते हैं। इस शोध में शामिल 30 प्रतिशत प्रतिभागियों में नींद संबंधी बाधाओं का उच्च स्तर देखने को मिला।

इसके अलावा जो लोग सप्ताह भर तेजी से सोशल मीडिया की पोस्ट चेक करते रहते हैं, उनमें नींद संबंधी परेशानियां होने की संभावना ऐसा न करने वाले लोगों की तुलना में तीन गुना अधिक होती है। वहीं जो लोग एक दिन में अपना अधिक समय सोशल मीडिया पर बिताते हैं, उनमें सोशल साइट पर कम समय बिताने वालों की तुलना में नींद संबंधी परेशानी होने की दोगुनी संभावना होती है।

लेवन्सन ने बताया कि सोशल मीडिया पर जाने की तीव्रता से नींद संबंधी परेशानियों को समझने में बेहतर जानकारी मिल सकती है। यह शोध ऑनलाइन पत्रिका प्रिवेंटिव मेडिसिन.

संपादक व प्रकाशक संदीप परमार द्वारा वीपीओ सिद्धबाड़ी, तहसील धर्मशाला, जिला कांगड़ा-176057, हि.प्र. से प्रकाशित व संपादित और बज्रेश्वरी प्रिंटर्स वीपीओ घरोह, तहसील धर्मशाला, जिला कांगड़ा हिप्र. से मुद्रित। फोन नंबर: 01892-235315 Mail ID: badaltirahain@gmail.com